आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:09/08/2022; Published:24/09/2022

धूसर आईने

- मुक्ता

कुछ हाथों में आईने हैं धूसर
वे देख रहे हैं अपने चेहरे
गढ़ रहे हैं परिभाषाएं
..... आजादी की
लोग सड़कों पर खोये हैं नींद में
गड्डमड्ड हो रही हैं मुठ्ठियाँ
उलटा लटका है बारूद का पेड़
फैलती जा रही है गंध...
समझना होगा....
आजादी और आजादी का फर्क।

****